there, there should be identity of India inside the Airport that we are in India. There is nothing like the Lion. There are some photographs here and there, and all things which we don't use are available there. The private staff cannot be allowed. Appreciating that it is in the capital of the country, let there be a symbol of the nation, let there be a symbol of our culture, let there be photographs of our own antique value places all over the country. In Delhi itself, we have got a lot of beautiful things which can be exhibited there. Why is our handloom shop not there? Why is our khadi shop not there? Why are our textile mills goods not available there? So, all these things should be looked into. **...(Time-bell rings)...** It has become a big 'P'. It is not a small 'P'; it is a big 'P'; that means private. Instead of PPP, it has become a big 'P'. *...(Interruptions)...* Sir, now I am coming to my subject. On the one side, we praise Nehru for public sector; on the other side, we convert this public sector into PPP and सो जाओ। That will not help. *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Yes, please conclude. You said at 1.00 p.m; 'only two-three minutes'.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, my colleague, Shri Rudy, took more than one minute. So, I have to repay it!

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Now, please conclude.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, I appreciate the point raised by the hon. Member. At the same time, the supreme authority in this matter should be the Government of India. The charges should be reasonable, and it should not be taken from the passenger. Once we take a railway ticket, we go inside the railway platform. If, again, you charge some other charge, that cannot be tolerated. Thank you very much, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Now, the remaining Special Mentions will be taken up before the House adjourns for the day. This discussion is not concluded. The House is adjourned for lunch till 2.30 p.m.

The House then adjourned for lunch at eight minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-one minutes past two of the clock, the VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN) in the Chair.

PRIVATE MEMBERS' RESOLUTION

Creation of a separate State of Telengana

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): We will now take up Private Members' Business. We will continue our discussion on the Resolution moved by Shri Prakash Javadekar.

श्री वी. हनुमंत राव (आन्ध्र प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, प्राइवेट मेम्बर्स बिल के ऊपर लास्ट वीक जब चर्चा हुई थी, तब मुझे दो-तीन मिनट ही बोलने का मौका मिला। आज जो मौका मिल रहा है, मैं इसका भरपूर फायदा लूंगा। ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रकाश जावडेकर (महाराष्ट्र): फायदा तभी होगा जब तेलंगाना बनेगा।

श्री वी. हनुमंत राव: फायदे का मतलब है कि मैं तेलंगाना की ही बात करूंगा। उपसभाध्यक्ष महोदय, 1953 से लेकर अब तक थोड़े लोग तेलंगाना चाह रहे थे, थोड़ा लोग विशाल आन्धा चाह रहे थे, 1956 में तेलंगाना बना। सर, कैसा बना? जब हमारा निज़ाम स्टेट अलग था, 1954 से 1956 तक हमारे चीफ मिनिस्टर Shri Burgula Ramakrishna Rao थे और मद्रास प्रेसिडेंसी से बाहर निकल कर कुरनूल, जो कैपिटल सिटी था, वहां पर कोई फैसिलिटी नहीं थी, पेड़ों के नीचे ऑफिस चला रहे थे, उस वक्त नीलम संजीवा रेड्डी डिप्टी चीफ मिनिस्टर थे, वे असेम्बली में बोले, देखो भैया, हमारे पास जो बजट है, बार-बार हम मद्रास जा रहे हैं, मद्रास से आ रहे हैं, इसी में हमारा खर्चा हो रहा है। हमारा तीन करोड़ रुपये का खर्चा हो रहा है। अगर तेलंगाना वाले, तेलुगु वाले हम मिल गए, तो तेलुगु स्पीकिंग का एक बहुत बड़ा स्टेट बनेगा और इसमें अपना भी फायदा होगा और उनका भी फायदा होगा। उस वक्त तेलंगाना वाले बोले भैया, आप लोग बड़े पढ़े लिखे लोग हैं, मद्रास प्रेसिडेंसी में आपका बहुत योगदान है, मद्रास प्रेसिडेंसी में उस समय, ब्रिटिश पीरिएड में मिशनरी स्कूल थे, आप लोग पढ़े लिखे लोग हैं, हमारे पास हैदराबाद में, निज़ाम स्टेट में, हमारे निज़ाम साहब ने एजुकेशन को ज्यादा तवज्जो नहीं दी थी, उस वजह से हम थोड़ा बैकवर्ड हैं। आप लोगों के साथ हम मिले, तो हमारा नुकसान होगा, ये विचार था। मगर यही बात नीलम संजीवा रेड्डी साहब फ्लोर ऑफ द हाउस में बोले, कुरनूल की असेम्बली में बोले, देखो, हम बार-बार बोल रहे हैं कि तेलंगाना वाले हमारे साथ मिलेंगे, तो दोनों के मिलने से अच्छा आन्ध्र प्रदेश बनेगा और उनका भी फायदा करेंगे। हम बोले कि तुम फायदा करते हो या नहीं करते हो, मगर हमारा नुकसान बिल्कुल मत करो। फायदा करना या नहीं करना, मगर हमारा नुकसान नहीं करना। उस समय हमारा बजट 5 करोड़ का था, जो प्लस में था और उनका बजट माइनस में था। फज़ल अली कमीशन की रिपोर्ट में भी आया कि तेलंगाना में 5 करोड़ रेवेन्यु बढ़कर है। उसके बावजूद भी हम मिले, हैदराबाद में उस समय हमारे पास, निज़ाम के जमाने में हमारा अपना trade था, हमारा अपना सिक्का था, वहां पर osmania hospital था, असेम्बली थी, सब कुछ था और हम खुशहाल थे। बाद में ये लोग आए। अच्छा है, हम भाई बंदी के साथ मिलकर रहेंगे। लेकिन फज़ल अली कमीशन की रिपोर्ट में यह कहा गया कि 5-6 साल तक देखेंगे और उसके बाद कोई तब्दीली करेंगे। फज़ल अली कमीशन की रिपोर्ट रहने के बावजूद भी, उस पर कोई अमल नहीं हुआ। बाद में कैसे-कैसे मुल्क ही निकाल दिए। उसके बाद जेंटलमैन एग्रिमेंट हुआ, उसको कोई तवज्जो नहीं दी। ऐसा होते-होते 1969 में नौजवानों का मूवमेंट हुआ, स्टूडेंट्स मूवमेंट हुआ, क्योंकि नौकरियों की प्रॉब्लम हो रही थी, इसलिए बड़ा एजिटेशन हुआ। दुनिया में कहीं भी इतने लोग नहीं मरे और इतने दिनों तक एजिटेशन भी नहीं चला, जितने दिनों तक वहां हुआ। उसकी लीडरशिप चेन्ना रेड्डी और मल्लिकार्जुन साहब ने की थी। बाद में एक समझौता हुआ कि हम तो मिल कर

रहेंगे। जब इंदिरा गांधी प्राइम मिनिस्टर थीं, तो उन्होंने दोनों को समझाया कि आइंदा ऐसी गलती मत करना, हम इस गलती को सुधारेंगे और ब्रह्मानन्द रेड्डी को हटाकर पी.वी. नरसिंहराव को मुख्य मंत्री बनाया था। उसके बाद 1972 में वहां फिर एक दूसरा मूवमेंट हुआ, जिसकी लीडरशिप Kakani Venkata Ratnam ने की थी और यहां पर हमारे भाई एम. वेंकैया नायडु हैं, उस वक्त उसकी लीडरशिप इन्होंने भी की थी। एक "सेप्रेट आन्ध्रा" नाम का मूवमेंट हुआ, उसके बाद फिर Six-point फॉर्मूले का सॉल्यूशन आया। Six-point फॉर्मूला चला गया, जेंटलमैन एग्रिमेंट चला गया और उसके बाद कितने कमीशन बने, रीजनल कमेटियां बनीं, उनमें से किसी को भी तवज्जो नहीं दी गई। हमारे साथ बार-बार नाइंसाफी होती रही। बजट बनाते थे और आखिरी दिनों में वह बजट आंध्र प्रदेश को चला जाता था। इसी कारण नौजवान पढ़-लिख नहीं पाते थे। आज नौजवान पढ़े-लिखे हैं। उनको पता लग गया कि हमें नौकरी मिलेगी तो तेलंगाना बनने पर ही मिलेगी। मैं आन्ध्रा यूथ कांग्रेस का प्रेजिडेंट था इसीलिए मैं आन्ध्र प्रदेश में बहुत पॉपुलर हूं। वहां के लोग भी बोल रहे हैं, वहां के intellectuals बोल रहे हैं, प्रोफेसर्स बोल रहे हैं कि 55 साल होने के बावजूद भी आप मिलकर नहीं रहे तो हम क्यों रहें। हमारी भी सेल्फ रिस्पेक्ट है, ऐसा वे बोल रहे हैं। मगर क्या है, चन्द लीडर हैं और उन चन्द लीडर्स के साथ हमारे बीजेपी वाले भी हैं, उनको मौका मिला था जब NDA की सरकार थी, तब तीन स्टेट बनाए थे, ...**(व्यवधान)**... आप सुनिए। मैं पूरी बात बोलूंगा, आपका भी समय आएगा। उत्तराखंड बना, झारखंड बना और उसके बाद छत्तीसगढ़ बना। यह सब कैसे हुआ? हम 1956 से यह चाहते थे कि तेलंगाना सेप्रेट स्टेट बने। सबसे बड़ा मूवमेंट हमारा है, मगर बाद में मूवमेंट में जो बंटवारा हुआ, वह बंटवारा भी क्या है। छत्तीसगढ़ अलग हुआ तो वह मध्य प्रदेश का पार्ट है, उत्तराखंड यूपी का पार्ट है और झारखंड बिहार का पार्ट है। साहब, हमारा तो पार्ट ही नहीं है, हमारा तो अटैच एंड डिटैच है। Kurnool से आए और Kachiguda railway station पर दो डिब्बे मिले, इधर का डिब्बा और उधर का डिब्बा, बस। यह अटैच एंड डिटैच है, हमें दूसरी स्टेट्स के साथ यह करना ही नहीं है। आप विदर्भ और गोरखालैंड की बात करते हैं। आप ये सब इसमें क्यों मिलाते हो? हमारी अलग स्टेट थी। हमारा निजाम एक अलग राज्य चलाता था और हजारों मील तक उनकी प्रॉपर्टी थी। कुछ तो गुलबर्गा में चले गए, कुछ रायचूर में चले गए और बाकी औरंगाबाद में चले गए। जो बचे हैं, उनके पास कोई जमीन ही नहीं है। तेलंगाना के किसी भी आदमी के पास कोई जमीन नहीं है, रहने के लिए जमीन नहीं है, कहीं झोंपड़ी डालने के लिए भी जमीन नहीं है। इसी वजह से लोग चाहते हैं और अब आन्ध्र प्रदेश के लीडर्स भी चाहते हैं। चन्द लीडर्स इसको रोक रहे हैं। इन्होंने BJP की मीटिंग में Kakinada में एक resolution निकाला, उसके बाद क्या हुआ था? उस वक्त चन्द्रबाबू नायडु NDA सरकार में वेरी पावरफुल आदमी थे। वे प्रधानमंत्री बनवाते थे और प्रेजिडेंट को भी बनवाते थे। उनके और वेंकैया नायडु के बीच में क्या अंडरस्टेंडिंग हुई, नहीं मालूम। वेंकैया नायडु खामोश बैठ गए और चन्द्रबाबू नायडु को मौका दे दिया। मैं एक नई बात बताता हूं। अभी हमारे साथी देवेंदर गौड ने बहुत अच्छी बात कही है, मैं उनका शुक्रगुजार हूं। मगर चन्द्रबाबू नायडु ने 7 दिसम्बर को एक स्टेटमेंट दी कि तेलुगुदेशम वाले, अगर असेम्बली में resolution लेकर आएंगे, तो हम बराबर उसको सपोर्ट करेंगे। एक तरफ

[श्री वी. हनुमंत राव]

के. सी. आर. आमरण अनशन पर बैठकर मरने को तैयार थे। वहां पर क्या होगा, उसको समझकर चिदम्बरम साहब ने कहा कि एक resolution आया है। उसको देखकर हमारे चिदम्बरम साहब ने 9 दिसम्बर को तेलंगाना के लिए क्या सोच रहे हैं, उसकी प्रोसेस को लेकर एक बयान दे दिया। उसके बाद यह घर-घर पहुंच गया, तेलंगाना के गांव-गांव तक चला गया, नौजवानों में जाग्रति आ गई, यहां तक कि हमारी 80 वर्ष की मां और बहनें भी बोल रहे हैं कि हर मर्तबा इलेक्शन होता है, के. सी. आर. साहब इलेक्ट होते, रिजाइन करते, फिर इलेक्ट होते, फिर रिजाइन करते। मैंने आदिलाबाद में पूछा कि अम्मा, बार-बार इलेक्शन होते हैं, उसने कहा कि नहीं बेटे, मैं इंदिरा गांधी को, कांग्रेस को वोट देती हूं, इस बार टी.आर.एस. को डालूंगी। मैंने पूछा, क्यों? उसने कहा क्योंकि मेरे पोते को नौकरी मिलेगी। मैं तो यह कहता हूं कि लोगों को, हमारी नौजवान पीढ़ी को यह विश्वास हो गया कि हमें नौकरियां मिलेंगी, हमारी उन्नति होगी, क्योंकि लोगों में यह सेल्फ रिस्पेक्ट आ गया। अभी भी बहुत सी गलतियां हुई हैं, इरिगेशन में गलती हुई है, डेवलपमेंट में गलती हुई है, आप ही बताइए कि हम कब तक इस तरह से खामोश रहेंगे? मैं भी तो यही कर रहा हूं। साहब, आप ही बताइए कि कितने लोग मरते हैं। एक पोट्टी श्रीरामुलू मर गया तो आंध्र बन गया, लेकिन अभी और कितने लोग मरेंगे। 400 लोग अभी मरे हैं। यह अभी की बात है। नौजवान बच्चा, जिसकी मां ने घरों में बर्तन मांझकर, झाडू लगाकर अपने बेटे को पढ़ाया, वह लड़का, एम.बी.ए. स्टूडेंट आत्मदाह के लिए तैयार है। ऐसा क्यों कर रहे हैं? उधर लोग मर रहे हैं, इसका मतलब क्या है? वह कहता है मुझे पढ़कर भी क्या फायदा है, मुझे नौकरी नहीं मिलती है, इसलिए मैं ऐसे मर रहा हूं। मैं चाहता हूं कि मेरे जितने भी पोलिटिकल भाई यहां बैठे हैं, उसी समय चन्द्रबाबू से बात करें कि कांग्रेस क्या कर रही है। हमारे चिदम्बरम साहब ने एक बयान दिया था, उसके बाद उल्टा हो गया ...**(व्यवधान)**...

श्री देवेन्द्र गौड टी. (आंध्र प्रदेश): नहीं साहब, चिदम्बरम साहब को बोल कौन रहा है ...**(व्यवधान)**... चन्द्रबाबू को बोलो ...**(व्यवधान)**... देखकर बोलो ...**(व्यवधान)**... यहीं पर हैं ...**(व्यवधान)**... वे कर रहे हैं ...**(व्यवधान)**... रूलिंग कर रहे हैं ...**(व्यवधान)**... नहीं तो हट जाएं ...**(व्यवधान)**...

श्री वी. हनुमंत राव: हमारे राजीव शुक्ल साहब को सुनिए ...**(व्यवधान)**... साहब सुनिए, मैं चंद्रबाबू का तरीका भी बताता हूं ...**(व्यवधान)**... वे पहले एक आन्सर देंगे, अब दूसरा आन्सर दे रहे हैं ...**(व्यवधान)**... साहब सुनिए, साहब सुनिए ...**(व्यवधान)**...

SHRI Y. S. CHOWDARY: Sir, ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI GUNDU SUDHARANI (Andhra Pradesh): Sir,. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): You will get time. ...*(Interruptions)*... I will give you time. ...*(Interruptions)*... I will give you time to reply. ...*(Interruptions)*... I will give you time to reply. ...*(Interruptions)*... Don't worry. ...*(Interruptions)*... You can also speak, if you want. ...*(Interruptions)*...

श्री वी. हनुमंत राव: डिप्टी चेयरमैन साहब, मैं एक मिसाल देता हूं, आप सुनिए, जब चिदम्बरम साहब बात करेंगे तो आपकी आवाज सुनाई देगी ...**(व्यवधान)**... अब चिदम्बरम साहब नहीं हैं, हम ही बात करें तो फायदा क्या है ...**(व्यवधान)**... साहब, मैं आपको एक मिसाल देता हूं, मैं शाम के वक्त रोजाना टी.वी. देखता हूं, आजकल आई.पी.एल. चल रहा है, आई.पी.एल. में यह होता है कि पहले दो कैप्टन्स को बुलाते हैं और बीच में अम्पायर एक कॉइन उछालता है, उसमें हैड या टेल बोलते हैं, हैड आता है या टेल उसके अनुसार निश्चित होता है, मगर यहां पर तो चन्द्रबाबू जी हैड भी उधर ही बोल रहे हैं और टेल भी उधर ही बोल रहे हैं ...**(व्यवधान)**... यह कैसे हो रहा है ...**(व्यवधान)**... अगर हैड या टेल एक ही आदमी बोलेगा तो कैसे होगा ...**(व्यवधान)**...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: Sir, I have a point of order. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Under what rule?

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: Under Rule 247. सर, इश्यू यह है कि कांग्रेस सबसे पूछ रही है कि आपकी राय क्या है, लेकिन सारा तेलंगाना पूछ रहा है कि कांग्रेस की राय क्या है। अभी कांग्रेस के लोग तेलंगाना में हैं तो वे तेलंगाना की बात करेंगे, आंध्र में जाकर आंध्र की बात करेंगे, लेकिन मुद्दा यह है कि विषय कौन सा है, आपकी कांग्रेस का स्टैंड क्या है, यह बताइए ...**(व्यवधान)**... बी.जे.पी. का स्टैंड क्लियर है, लेकिन कांग्रेस का स्टैंड क्या है, आप यह बताइए ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): You can ask this question when your turn comes. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: That is the point, Sir. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): You had an opportunity to speak. ...*(Interruptions)*...

श्रीमती रेणुका चौधरी (आंध्र प्रदेश): आपका प्वाइंट ऑफ ऑर्डर नहीं है ...**(व्यवधान)**... ये लोग यही करते हैं ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रकाश जावडेकर: पार्लियामेंट में हैं ...**(व्यवधान)**... पार्लियामेंट में ...**(व्यवधान)**... सभापति वे हैं, आप नहीं हैं ...**(व्यवधान)**...

श्री वी. हनुमंत राव: कांग्रेस का राज मैं बताता हूं ...**(व्यवधान)**... कांग्रेस ने हमेशा एक ही बात बोली है, दो स्टेटमेंट नहीं बोले हैं ...**(व्यवधान)**... हमारी लीडर श्रीमती सोनिया गांधी जी और मनमोहन सिंह जी आज भी रेडी हैं ...**(व्यवधान)**... वे क्यों सपोर्ट नहीं कर रहे हैं ...**(व्यवधान)**... कांग्रेस पार्टी में हैं ...**(व्यवधान)**... पहले उन्होंने डबल गेम क्यों खेली ...**(व्यवधान)**... उन्होंने 7 तारीख को स्टेटमेंट क्यों दी ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी. जे. कुरियन): हनुमंत राव जी, please address the Chair. ...*(Interruptions)*...

SHRI Y. S. CHOWDARY: Sir, ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI GUNDU SUDHARANI: Sir, *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): I will give you time to speak. *...(Interruptions)...* Your name can be added. Don't worry. Let it be over. *...(Interruptions)...* I will give you time. *...(Interruptions)...*

श्री वी. हनुमंत राव: उनके बयान देने के बाद ...**(व्यवधान)**... कितने लोग मरे हैं ...**(व्यवधान)**... बयान दे सकते हैं ...**(व्यवधान)**... अभी बोलिए ...**(व्यवधान)**... चंद्रबाबू नायडु ...**(व्यवधान)**... बोलिए ...**(व्यवधान)**... आप हमसे बोल रहे हैं कि तेलुगुदेशम ...**(व्यवधान)**... यह बात बोल रहे हैं ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Now, please *...(Interruptions)...*

श्री वी. हनुमंत राव: पार्लियामेंट में एक बात बोल रहे हैं और वहां पब्लिक में ऐसा बोल रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... हम ऐसा नहीं बोल रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... हम बराबर तेलंगाना देने के लिए बोल रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... सोनिया गांधी जी बराबर बोल रही हैं ...**(व्यवधान)**...

श्री देवेंदर गौड टी.: आपका stand क्या है? ...**(व्यवधान)**... How can he talk like that, Sir? He is a responsible Member; how can he talk like that? *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Now, please *...(Interruptions)...*

श्री पलवई गोवर्धन रेड्डी (आंध्र प्रदेश): सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि ...**(व्यवधान)**...

SHRI DEVENDER GOUD T.: Sir, you must give me some time.

श्री प्रकाश जावडेकर: सर, हर पार्टी के लोग यहां हैं। ...**(व्यवधान)**... सबकी भूमिका बता दें, तो यह सवाल अभी समाप्त हो जाएगा। ...**(व्यवधान)**...

श्री देवेंदर गौड टी.: सर, यह पहली मर्तबा नहीं है। ...**(व्यवधान)**... कांग्रेस कई वर्षों से ऐसा कर रही है। ...**(व्यवधान)**... सिर्फ ऐसी बातों में लगाकर ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): If all of you speak at once, what can I do? *...(Interruptions)...*

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: They have no policy. *...(Interruptions)...* They only want to mislead the people. *...(Interruptions)...*

श्री मोहम्मद अली खान (आंध्र प्रदेश): जब तीन रियासतें बनी थीं, तब बीजेपी ने तेलंगाना के लिए क्यों नहीं कहा? ...**(व्यवधान)**...

†[**جناب محمد علی خان** : جب تین ریاستیں بنیں تھیں، تب بی-جے-پی- نے تلنگانہ کے لئے کیوں نہیں کہا؟ --(مداخلت)--]

†Transliteration in Urdu Script.

श्री वी. हनुमंत राव: जब तीन स्टेट्स बनीं थी, तो वेंकैया नायडु जी ने क्यों मदद नहीं की? ...**(व्यवधान)**... जब आन्ध्र का मूवमेंट ...**(व्यवधान)**... उस वक्त आपके साथ हुकूमत थी ...**(व्यवधान)**... आपने क्यों नहीं किया? ...**(व्यवधान)**... आप मुझे यह बताइए। ...**(व्यवधान)**... आज इस बात को बोल रहे हैं ...**(व्यवधान)**... आपने पहले क्यों नहीं बोला? ...**(व्यवधान)**... हम इसे करके बताएंगे, मगर आपके जैसी हमारी पार्टी नहीं है ...**(व्यवधान)**...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Who are they to talk about the Government? ...*(Interruptions)*...

SHRI DEVENDER GOUD T.: Let the Home Minister come and answer. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: They have a dual policy. ...*(Interruptions)*...

श्री वी. हनुमंत राव: हम लोगों को विश्वास है, इसी वजह से हमारे चिदम्बरम साहब ने स्टेटमेंट दिया था ...**(व्यवधान)**... मगर आप लोग मुकर गए। ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रकाश जावडेकर: हम इसका समर्थन करते हैं ...**(व्यवधान)**... आप आज बिल लेकर आओ। ...**(व्यवधान)**...

श्री वी. हनुमंत राव: चन्द्रबाबू जी को बोलिए ...**(व्यवधान)**...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: They have a dual policy. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): What is this? What is happening? ...*(Interruptions)*... The House is adjourned for half-an-hour.

The House then adjourned at forty-seven minutes past two of the clock.

The House reassembled at seventeen minutes past three of the clock,

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN) in the Chair.

MESSAGE FROM LOK SABHA

SECRETARY-GENERAL: Sir, I beg to report that the Lok Sabha, at its sitting held on Thursday, the 17th May, 2012, adopted the following motion:—

"That this House do extend upto the last day of the Winter Session, the time for presentation of the report of the Joint Committee to examine matters relating to allocation and pricing of telecom licences and spectrum."

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Shri Hanumantha Rao, please continue.